बाबा मुक्तानन्द की सिखावनियाँ

यह माह, बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि की वर्षगाँठ का माह है और इस दौरान सिद्धयोगी और नए साधक महान 'सिद्धगुरु' बाबा मुक्तानन्द के असाधारण जीवन व उनकी परम्परा का सम्मान करते हैं और उसका उत्सव मनाते हैं।
भगवान को जानने की अपनी ललक के कारण, बाबा जी में बहुत छोटी आयु से ही आध्यात्मिक अभ्यासों के प्रति आकर्षण था।

बाबा जी हमेशा सत्संग की, सत्य की संगति की खोज करते। उन्होंने स्वयं को साधना के प्रति समर्पित कर दिया; साधना अर्थात् वह आध्यात्मिक अभ्यास जो साधक को दिव्यता के साथ एकात्म भाव की ओर ले जाता है, वह दिव्यता जो हर व्यक्ति व हर वस्तु के मूल में विद्यमान है। अपने सच्चे स्वप्रयत्नों द्वारा व अपने श्रीगुरु भगवान नित्यानन्द की कृपा से बाबा जी सिद्धगुरु बने। सिद्धगुरु वे होते हैं जिन्हें शक्तिपात दीक्षा के उपहार द्वारा अन्य साधकों को जाग्रत करने का अधिकार और सामर्थ्य प्राप्त होता है।

बाबा जी अक़्सर इस विषय में बताते थे कि भगवान के प्रति प्रेम और अपनी ही आत्मा के रूप में भगवान को जानने की ललक होने से कैसे एक साधक की साधना पोषित होती है और शक्तिपूरित हो जाती है। इन उद्धरणों को पढ़ने व इनका अध्ययन करने से, आप भगवान के प्रति अपनी ललक और प्रेम पर मनन कर सकते हैं, अपनी सच्ची पहचान को जानने की अपनी गहन चाह पर मनन कर सकते हैं।

जब आप बाबा जी के वचनों को पढ़ें व उन पर मनन करें तो स्वयं से ये प्रश्न पूछकर आप 'आत्मविचार' भी कर सकते हैं —

- बाबा जी के वचनों से मैं क्या सीख सकता हूँ जो मेरी साधना को विकसित करेगा?
- मुझे अपनी साधना में क्या प्रोत्साहित करता है?
- अपने हृदय में आध्यात्मिक ललक के सद्गुण को पहचानने और उसे पोषित करने के लिए मैं कौन-से व्यावहारिक कदम उठा सकता हूँ?

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।